



سبودھ گپتا

گاندھی کے تین بندر، 2012

کٹارا ثقافتی گاؤں

سبودھ گپتا (پیدائش 1964، ہندوستان)

کانسہ اور سٹیل

بالاکلا سر 200 131 x 155 سینٹی میٹر؛ گیس ماسک ہیڈ: 184 140 x 256 سینٹی میٹر؛
ہیلٹ کا سر: 175 125 x 150 سینٹی میٹر

دوحہ کے زندگی سے بھر پور ثقافتی گاؤں، کٹارا کے بیچ میں واقع، سبودھ گپتا کا گاندھی کے تین بندر لوگوں کی توجہ حاصل کرتا ہے۔ جنگ اور امن کے چیلنجنگ موضوعات سے نمٹتے ہوئے، تین حصوں پر مشتمل مجسمہ تین سروں پر مشتمل ہے - ایک گیس ماسک میں، ایک فوجی اور دوسرا دہشت گردی کے ہڈ میں۔

ہر ٹکڑا کھانا پکانے کے آلات، استعمال شدہ پیالوں، روایتی ہندوستانی لنچ بکس اور شیشے کے پیالوں پر مشتمل ہے۔ ایک ساتھ، وہ گاندھی کے مشہور بصری استعارہ کو یاد کرتے ہیں - تین عقلمند بندر جو 'برائی نہ دیکھیں، برائی نہ سنیں، برائی نہ بولیں' کی کہاوت کی نمائندگی کرتے ہیں۔

گپتا کا کام پینٹنگ، مجسمہ سازی، فوٹو گرافی، ویڈیو اور کارکردگی سمیت مختلف ذرائع پر محیط ہے۔

اپنے پورے فن کے دوران، وہ ایسی اشیاء استعمال کرتا ہے جو ہندوستانی زندگی کے قابل شناخت شہبہ ہیں، جیسے گھریلو باورچی خانے، سائیکلیں، سکوتر اور ٹیکسیاں۔ انہیں ان کے اصل سیاق و سباق سے منتقل کر کے، وہ ان کی حیثیت کو عام شے سے قابل قدر آرٹ ورک تک پہنچاتا ہے۔





-सुबोध गुप्ता गांधी के तीन बंदर, 2012 कटारा सांस्कृतिक गांव



सुबोध गुप्ता (जन्म 1964, भारत)

कांस्य और इस्पात

बालाकलावा हेड 200 x 131 x 155 सेमी; गैस मास्क हेड: 184 x 140 x 256 सेमी; हेलमेट हेड: 175 x 125 x 150 सेमी

दोहा के हलचल भरे सांस्कृतिक गांव कटारा के बीच में स्थित, सुबोध गुप्ता की पुस्तक गांधीज़ श्री मंकीज़ ध्यान आकर्षित करती है। युद्ध और शांति के चुनौतीपूर्ण विषयों से निपटने वाली, तीन भागों वाली मूर्तिकला में तीन सिर हैं - एक गैस मास्क में, एक सैनिक और दूसरा आतंकवादी हुड में।

प्रत्येक टुकड़ा खाना पकाने के उपकरणों, प्रयुक्त बाल्टी, पारंपरिक भारतीय लंच बॉक्स और कांच के कटोरे से बना है। साथ में, वे गांधी के प्रसिद्ध दृश्य रूपक को याद करते हैं - तीन बुद्धिमान बंदर जो 'बुरा न देखें, बुरा न सुनें, बुरा न बोलें' कहावत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

गुप्ता का काम पेंटिंग, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, वीडियो और प्रदर्शन सहित विभिन्न माध्यमों के बीच बदलता रहता है।

अपनी पूरी कला में, वह उन वस्तुओं का उपयोग करते हैं जो भारतीय जीवन के पहचाने जाने योग्य प्रतीक हैं, जैसे घरेलू बरतन, साइकिल, स्कूटर और टैक्सी। उन्हें उनके मूल संदर्भ से स्थानांतरित करके, वह उनकी स्थिति को सामान्य वस्तु से मूल्यवान कलाकृति तक बढ़ा देता है।
